

ए चट्ठी ह याकूब के दुवारा संसार म बगरे परमेसर के मनखेमन ला लिखे गे हवय (1:1)। ए बात म सहमती हवय की याकूब ह यीसू के भाई रहिसि (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3)। ए चट्ठी ह रोज-रोज के जनिगी के सकिछा के बारे म हवय। चट्ठी के लिखइया ह प्रतदिन के जनिगी के सकिछा ला समझाय खातर अलंकारकि भासा के उपयोग करे हवय। ओह मसीही बचिार ला धियान म रखके, रोज-रोज के कतको बसिय के बखान करे हवय, जइसने की धनी अऊ गरीब, लोभ, उत्तम चाल-चलन, भेदभाव, बसिवास अऊ करम, भासा के उपयोग, बुद्धि, झगरा, घमंड अऊ नमरता, दोस लगई, लबरा गोठ, धीरज अऊ पराथना। याकूब ह मसीही बसिवास के संगे-संग काम के ऊपर जोर देथे। ए चट्ठी ला खाल्हे लिखे भाग म बांटे जा सकथे।

जोहार 1:1

बसिवास अऊ बुद्धि 1:2-8

गरीब अऊ धनवान 1:9-11

परख अऊ लोभ 1:12-18

सुनई अऊ करई 1:19-27

भेदभाव के बरिध म चेतउनी 2:1-13

बसिवास अऊ काम 2:14-26

मसीही मनखे अऊ ओकर बातचीत 3

मसीही मनखे अऊ संसार 4:1-5:6

आने सकिछामन 5:7-20

1 परमेसर अऊ परभू यीसू मसीह के सेवक याकूब कोर्ता ले, ए चट्ठी ओ बारह गोत्र के मनखेमन ला लिखे जावत हवय, जऊन मन संसार म एती-ओती बगर गे हवय। तुमन जम्मो इन ला जोहार मलिया।

लोभ अऊ परछि

2हे मोर भाईमन, जब तुम्हर ऊपर नाना कसिम के परछि आथे, त एला बड़ आनंद के बात समझव, 3काबरकी तुमन जानत हव की तुम्हर बसिवास के परखे जाय ले तुम्हर धीरज ह बढ़थे। 4पर धीरज ला अपन काम

करन देवव की तुमन पूरा अऊ सिद्धि हो जावव अऊ तुमन म कोनो बने बात के कमी इन रहय।

5कहूँ तुमन ले कोनो म बुद्धि के कमी हवय, त ओह परमेसर ले मांगय, जऊन ह बगिर गलती देखे, जम्मो इन ला खुला मन ले देथे अऊ एह ओला दिये जाही। 6पर ओह बसिवास के संग मांगय अऊ ओकर मन म कुछू संका इन रहय, काबरकी संका करइया ह समुंदर के लहरा के सहीं अय, जऊन ह हवा ले एती-ओती बहथे अऊ उछलथे। 7अइसने मनखे ह ए इन सोचय की ओला परभू ले कुछू मलिही। 8ओह दुचिंता मनखे ए अऊ ओह अपन जम्मो काम म चंचल ए।

9गरीब आदमी ए बात के घमंड करय की ओह परमेसर के नजर म बड़े अय। 10अऊ धनवान मनखे ह खुस होवय की परमेसर ह ओला दीन-हीन करे हवय। काबरकी ओह जंगली फूल सहीं खतम हो जाही। 11जब सूरज ह नकिरथे, त अबूबड़ घाम पड़थे अऊ पौधा ला सूखा देथे; ओकर फूल ह झर जाथे अऊ ओकर सुघरपन ह खतम हो जाथे; ओहीच कसिम ले, धनवान गलो अपन काम ला करत नास हो जाही।

12धइन ए ओ मनखे, जऊन ह जनिगी के परछि म डोले नई; काबरकी ओह चोखा नकिरके जनिगी के ओ मुकुट ला पाही याने की सदाकाल के जनिगी पाही, जेकर वायदा परभू ह अपन मया करइयामन ले करे हवय। 13जब काकरो परछि होथे, त ओह ए इन कहय की मोर परछि परमेसर ह करत हवय, काबरकी न तो खराप बात ले परमेसर के परछि हो सकथे अऊ न ही ओह काकरो परछि खुद करथे।

14पर हर एक मनखे अपनेच खराप ईछा के कारन फंसथे अऊ परछि म पड़थे। 15तब खराप ईछा ह बढ़के पाप ला जनमथे अऊ जब पाप ह बढ़ जाथे, त मनखे के आतमकि मरितु हो जाथे।

16हे मोर भाईमन, भोरहा म इन रहव। 17काबरकी हर एक बने अऊ उत्तम बरदान स्वरग ले आथे अऊ परमेसर ददा, जऊन

ह अंजोर ला बनाईस, ओकर कोर्ता ले, ए बरदान ह मलित्थे, अऊ ओह बदलत छइहां सहीं नई बदलय। 18ओह अपन ईछा ले हमन ला सुघर संदेस के दुवारा नवां जनिगी दीस, ताका हमन परमेसर बर ओकर बनाय जम्मो चीजमन ले अलग करे जावन।

सुनव अऊ करव

19हे मोर भाईमन, ए गोठ ला तुमन जान लेवव: हर एक मनखे पहिली धियान देके सुनय अऊ धीर धरके बोलय अऊ तुरते गुस्सा झन होवय। 20काबरका मनखे के गुस्सा ह परमेसर के धरमीपन नई लाने सकय। 21एकरसेता जम्मो गंदगी अऊ बईरता ला छोड़ देवव, अऊ दीन-हीन होके ओ बचन ला गरहन कर लेवव, जऊन ह तुम्हर हरिदय म बोय गे हवय अऊ तुम्हर उद्धार कर सकथे। 22पर बचन के मुताबकि चलइया बनव अऊ बचन के सरिपि सुनइया बनके अपन-आप ला धोखा झन देवव। 23जऊन ह बचन ला सुनथे अऊ ओकर मुताबकि नई चलय, त ओह ओ मनखे सहीं अय, जऊन ह अपन चेहरा ला दरपन म देखथे। 24अऊ ओह अपन-आप ला देखके चल देथे अऊ तुरते भुला जाथे कि ओह कइसने दिखथे। 25पर जऊन मनखे ह ओ सदिध कानून ऊपर धियान लगाथे, जऊन ह हमन ला सुतंतर करथे, ओ मनखे ह अपन काम म एकरसेता आससि पाही, काबरका ओह सुनके भूलय नई, पर ओकर मुताबकि चलथे।

26कहूं कोनो अपन-आप ला धारमकि समझथे अऊ अपन जीभ ला अपन बस म नई रखय, त ओह अपन-आप ला धोखा देथे अऊ ओकर धरम ह बेकार ए। 27हमर परमेसर ददा के नजर म सही अऊ बने धरम ए अय कि दुःख म अनाथ अऊ बधिवामन के देख-रेख करय, अऊ अपन-आप ला संसार के बुरई ले अलग रखय।

गरीबमन के आदर करव

2 हे मोर भाईमन हो, जब तुमन हमर महिमामय परभू यीसू मसीह ऊपर

बसिवास करथव, त काकरो संग भेदभाव झन करव। 2कहूं कोनो मनखे सोन के मुन्दरी अऊ सुघर कपड़ा पहरिके तुम्हर सभा म आवय अऊ एक गरीब मनखे घलो फटहा-पुराना कपड़ा पहरिके आवय, 3अऊ कहूं तुमन ओ सुघर कपड़ा पहिर मनखे के मुह देखके कहव, “तेंह इहां बने ठऊर म बईठ” अऊ ओ गरीब मनखे ला कहव, “तेंह इहां खड़े रह या मोर गोड़ करा भुइयां म बईठ।” 4त का तुमन आपस म भेदभाव नई करेव? अऊ खराप बचिार ले नयाय करइया नई ठहरिव।

5हे मोर मयारू भाईमन, सुनव: का परमेसर ह ए संसार के गरीबमन ला नई चुनसि की ओमन बसिवास म धनी, अऊ ओ स्वरग राज के भागीदार बनय, जेकर वायदा परमेसर ह ओमन ले करसि, जऊन मन ओकर ले मया करथे। 6पर तुमन ओ गरीब के बेजतूती करेव; का धनी मनखे तुम्हर ऊपर अतयाचार नई करय अऊ का ओमन तुमन ला कचहरी म घसीटके नई ले जावय? 7का ओमन परमेसर के सुघर नांव के ननिदा नई करय, जेकर तुमन अव?

8कहूं तुमन परमेसर के बचन म लिखाय ए राजकीय कानून ला पूरा करथव, “तें अपन पड़ोसी ले अपन सहीं मया कर।” त सही म बने करथव। 9पर कहूं तुमन भेदभाव करथव, त पाप करथव अऊ परमेसर के कानून ह तुमन ला दोसी ठहरिथे। 10काबरका जऊन कोनो जम्मो कानून के पालन करथे, पर एकेच बात म चूक जाथे, त ओह जम्मो बात म दोसी ठहरिही। 11काबरका परमेसर ह ए कहे हवय, “छिनारी झन करव।” ओही परमेसर ह ए घलो कहे हवय, “हतिया झन करव।” कहूं तुमन छिनारी नई करव, पर काकरो हतिया करथव, त तुमन दोसी ठहरेव। 12तुमन ओ मनखेमन सहीं गोठियावव, अऊ काम करव, जऊन मन के नयाय ओ कानून के मुताबकि होही, जऊन ह सुतंतर करथे। 13काबरका जऊन ह दया नई करय, ओकर नयाय परमेसर ह बगिर दया के करही। काबरका दया ह नयाय ऊपर जय पाथे।

बसिवास अऊ काम

14हे मोर भाईमन हो, कहूँ कोनो कहय की ओह बसिवास करथे, पर ओह बसिवास के मुताबकि काम नई करय, त एकर ले का फायदा? का अइसने बसिवास ह कभू ओकर उद्धार कर सकथे? 15कहूँ कोनो भाई या बहनी उधरा हवय अऊ ओला रोज खाय बर नई मलित्थे। 16अऊ तुमन ले कोनो ओला कहय, “खुसी रह, गरम रह अऊ तोला भरपेट खाना मलिय।” पर जऊन चीजमन देहें बर जरूरी अंय, ओमन ला नई देवय, त का फायदा? 17वइसनेच बसिवास घलो करम के बगिर मरे सहीं होथे। 18पर कोनो कह सकथे, “तोर करा बसिवास हवय अऊ मोर करा करम हवय।”

तेंह अपन बसिवास ला मोला करम के बगिर तो देखा; अऊ मेंह अपन बसिवास ला मोर करम के दुवारा तोला देखाहूँ। 19तेंह बसिवास करथस की एकेच परमेसर हवय; बने करथस; परेत आतमामन घलो अइसनेच बसिवास रखथें अऊ कांपथें।

20पर हे मुख अऊ अलाल मनखे, का तेंह ए नई जानत हवस किकरम बगिर बसिवास ह बेकार ए। 21जब हमर पुरखा अब्राहम ह अपन बेटा इसहाक ला बेदी ऊपर चघाईस, त का ओह अपन करम के दुवारा परमेसर के नजर म धरमी नई ठहरसि। 22तेंह देखे की ओकर करम ह बसिवास के मुताबकि रहिसि अऊ करम के दुवारा ओकर बसिवास ह पूरा होईस। 23अऊ परमेसर के ए बचन ह पूरा होईस, “अब्राहम ह परमेसर ऊपर बसिवास करसि अऊ धरमी गने गीस, अऊ ओला परमेसर के संगवारी कहे गीस।” 24तुमन देख डारेव की मनखेमन सरिपि बसिवास के दुवारा ही नई, पर संग म करम के दुवारा धरमी ठहरिथें। 25वइसनेच, का राहाब बेसुया ह घलो अपन करम के दुवारा धरमी नई ठहरसि, जब ओह इसरायली भेदयिामन ला अपन घर म ठऊर दीस, अऊ आने रसता ले ओमन ला बदि कर दीस? 26जइसने देहें ह आतमा के बगिर मरे हवय, वइसनेच बसिवास ह घलो करम के बगिर मरे हवय।

3 हे मोर भाईमन हो, तुमन ले बहुंत झन गुरू झन बनव, काबरकी तुमन जानत हव की गुरूमन के अऊ कड़ई ले नयाय होही। 2हमन जम्मो झन अक्सर गलती करथन। जऊन कोनो अपन गोठ म कभू गलती नई करय, ओह सद्धि मनखे ए; अऊ ओह अपन देहें ला बस म कर सकथे।

3जब हमन अपन गोठ ला मनवाय बर घोड़ामन के मुहूँ म लगाम लगाथन, त हमन ओकर पूरा देहें ला घलो अपन बस म कर लेथन। 4देखव, पानी जहाज घलो, जऊन ह बहुंत बड़े होथे; अऊ तेज हवा के दुवारा चलथे, तभो ले एक नानकून पतवार के दुवारा मांझी ह अपन ईछा के मुताबकि ओला जहिं चाहथे उहां ले जाथे। 5वइसनेच जीभ ह घलो देहें के एक नानकून अंग ए, पर ओह बहुते डींग मारथे। देखव, एक नानकून आगी के चनिगारी ले कतेक बड़े जंगल म आगी लग जाथे। 6जीभ ह घलो आगी सहीं अय। एह हमर देहें म अधरम के एक संसार ए। एह एक अइसने आगी ए, जऊन ला नरक कुन्ड के आगी ले बारे गे हवय अऊ पूरा जनिगी म आगी लगाके मनखे ला बरबाद कर देथे।

7हर एक कसिम के जीव-जन्तु, चरिई अऊ पेट के भार रेंगइया जीव-जन्तु अऊ पानी के जीव-जन्तु, मनखेमन के बस म हो सकथें अऊ ओमन बस म हो घलो गे हवय। 8पर जीभ ला कोनो मनखे अपन बस म नई कर सकय। ओह अइसने सैतान ए, जऊन ह कभू चुप नई रहय। ओह अइसने जहर ले भरे हवय, जऊन ह परान ले लेथे।

9जीभ ले हमन परभू अऊ ददा के महिमा करथन अऊ इही जीभ ले मनखेमन ला सराप घलो देथन, जऊन मन परमेसर के सरूप म बनाय गे हवय। 10ओहीच मुहूँ ले महिमा अऊ सराप दूनों नकिरथे। हे मोर भाईमन हो, अइसने नई होना चाही। 11का मीठा अऊ नूनचूर पानी झरना के एकेच मुहूँ ले नकिर सकथे? 12हे मोर भाईमन, का अंजीर के रूख म जैतून या अंगूर के नार म अंजीर फर सकथे? वइसने नूनचूर झरना ले मीठा पानी नई नकिर सकय।

दू किसिम के बुद्धि

13तुमन म बुद्धिमान अऊ समझदार कोन ए? ओह अपन काम अऊ बने चाल-चलन के दुवारा एला नमरता सहित देखावय, जऊन ह बुद्धि ले उपजथे। 14पर कहूँ तुमन अपन मन म भारी जलन अऊ सुवारथ रखथव, त एकर बर घमंड झन करव अऊ सत के बरिध झन करव। 15अइसने बुद्धि ह स्वरग ले नई आवय, पर एह संसारिक, सारीरिक अऊ सैतान के अय। 16काबरकि जहिं जलन अऊ सुवारथ होथे, उहां झंझट अऊ हर किसिम के बुरई पाय जाथे।

17पर जऊन बुद्धि ह स्वरग ले आथे, ओह पहिली सुध, ओकर बाद मलिनसार, कोमल, नम्र सुभाव, दया, अऊ बने फर ले भरे रहथि अऊ ओम भेदभाव अऊ कपट नई रहय। 18अऊ जऊन मेल-मल्लाप करइयामन ह मेल-मल्लाप करवाथे, ओमन धरमीपन के फर उपजाथे।

4 तुमन म लड़ई अऊ झगरा कहां ले आ गीस? का एमन तुम्हर संसारिक ईछा ले नई आवंय, जऊन मन तुम्हर भीतर लड़त-भड़ित रहथि? 2तुमन कुछू चीज ला पाय के आसा रखथव, पर तुमन ला नई मलिय। तुमन मनखे के हतिया करथव अऊ लालच करथव, अऊ जऊन कुछू के ईछा रखथव, ओह तुमन ला नई मलिय। तुमन लड़थव-झगरथव। तुमन ला नई मलिय, काबरकि तुमन परमेसर ले नई मांगव। 3जब तुमन मांगथव, त तुमन ला नई मलिय, काबरकि तुमन गलत मनसा ले मांगथव कि ओला अपन भोग-बिलास म उडा देवव।

4हे छनिारी करइया मनखेमन, का तुमन नई जानव कि संसार ले मतानी कई के मतलब परमेसर ले बईरता कई ए? जऊन कोनो संसार के संगवारी होय चाहथे, ओह अपन-आप ला परमेसर के बईरी बनाथे। 5का तुमन ए समझथव कि परमेसर के बचन ह बगिर कारन के कहथि कि जऊन आतमा ला ओह हमन म बसाय हवय, ओकर दुवारा जलन पैदा होवय। 6ओह तो अनुग्रह देथे। एकर कारन परमेसर के बचन ह कहथि:

“परमेसर ह घमंडीमन के बरिध करथे, पर दीन-हीन मनखेमन ऊपर अनुग्रह करथे।”

7एकरसेति तुमन परमेसर के बस म रहव, अऊ सैतान के सामना करव, त सैतान ह तुम्हर करा ले भाग जाही। 8परमेसर के लकठा म आवव, त ओह घलो तुम्हर लकठा म आही। हे पापी मनखेमन, अपन हांथ ला धोवव, अऊ हे ढोंगी मनखेमन, अपन हरिदय ला सुध करव। 9दुःखी होवव, अऊ सोक करव अऊ रोवव। तुम्हर हंसई ह सोक म अऊ तुम्हर आनंद ह उदासी म बदल जावय। 10परभू के आघू म दीन-हीन बनव, त ओह तुमन ला बढ़ाही।

11हे भाईमन हो, एक-दूसर ला बदनाम झन करव। जऊन ह अपन भाई के बदनामी करथे अऊ अपन भाई ऊपर दोस लगाथे, ओह परमेसर के कानून ला बदनाम करथे अऊ कानून ऊपर दोस लगाथे। जब तेंह कानून ऊपर दोस लगाथस, त तेंह कानून म चलइया नई, पर ओकर ऊपर हाकमि ठहरि। 12कानून के देवइया अऊ नियाय करइया एकेच झन अय अऊ ओह परमेसर ए, जेकर करा बचाय अऊ नास करे के सामरथ हवय। पर तेंह कोन अस कि अपन पड़ोसी ऊपर दोस लगाथस?

घमंड के बरिध म चेतउनी

13सुनव, तुमन जऊन मन ए कहथिव कि आज या कल हमन कोनो अऊ सहर म जाके उहां एक बछर रहबिबो, अऊ काम-धंधा करके पईसा कमाबो। 14तुमन ए नई जानत हव कि कल का होही। तुम्हर जनिगी ह का ए? तुमन त भाप के सहीँ अव, जऊन ह छनि भर दखिथे, अऊ तब लोप हो जाथे। 15एकर बदले, तुमन ला ए कहना चाही कि कहूँ परभू के ईछा होही, त हमन जीयत रहबिबो अऊ एया ओ बुता ला करबो। 16पर तुमन अपन डींग मारथव अऊ घमंड करथव। अइसने जम्मो घमंड के बात ह गलत ए। 17एकरसेति, जऊन मनखे ह भलाई करे ला जानथे अऊ नई करय, ओकर बर एह पाप ए।

धनवानमन ला चेतउनी

5 हे धनवान मनखेमन, मोर बात ला सुनव; तुमन अपन ऊपर अवइया बपित के कारन गोहार पारके रोवव। 2तुम्हर धन-दौलत ह सड़ गे हवय अऊ तुम्हर कपड़ामन ला कीरा खा गे हवय। 3तुम्हर सोना-चांदी म जंक लग गे हवय, अऊ ए जंक ह तुम्हर बरिध म गवाही दही की तुमन कतेक लालची अव अऊ एमन तुम्हर कठोर सजा के कारन बनहीं। तुमन संसार के आखरी समय म धन बटोरे हवव। 4देखव, जऊन बनहारमन तुम्हर खेत के फसल ला लुईन, ओमन के बनी ला तुमन धोखा देके रख ले हवव, एकरसेती ओमन रोवत हवय; अऊ ओमन के रोवई ह सर्वसकृतिमान परभू के कान तक पहुंच गे हवय। 5तुमन धरती म भोग-बिलास अऊ सुख के जनिगी बताय हवव। तुमन बध होय के दिन खातरि अपन-आप ला मोटा-ताजा कर ले हवव। 6तुमन धरमी मनखेमन ऊपर दोस लगाके ओमन ला मार डारेव। ओमन तुम्हर बरिध नई करत रहिन।

धीरज अऊ पराथना

7एकरसेती, हे भाईमन, परभू यीसू के लहुंटे के आवत तक ले धीरज धरे रहव। देखव, किसान ह कइसने खेत के कीमती फसल के बाट जोहथे अऊ कइसने पहिली अऊ आखरी बरसा होवत तक धीरज धरे रहथि। 8तुमन घलो धीरज धरव, अऊ अपन हरिदय ला मजबूत करव, काबरकी परभू के अवई लकठा म हवय। 9हे भाईमन, एक दूसर ऊपर दोस झन लगावव ताकी परमेसर तुमन ला दोसी झन ठहरिवय। देखव, मसीह ह नयाय करे बर बहुंत जल्दी अवइया हवय। ओह दुवारी म ठाढ़े हे सही समझव।

10हे भाईमन, ओ अगमजानीमन ला सुरता करव, जऊन मन परभू परमेसर के नांव म तुम्हर ले गोठयाईन। दुःख के बेरा म ओमन जऊन धीरज धरनि, ओला एक उदाहरन के रूप म लेवव। 11जइसने की तुमन जानत हव की धीरज धरइयामन ला हमन आससिति

मनखे समझथन। तुमन अय्यूब के धीरज के बारे म तो सुने हवव अऊ परभू परमेसर ह कइसने ओकर धीरज के परतफिल दीस, ओला घलो जानत हव। परभू परमेसर ह अब्बड़ दयालु अऊ करिपालू अय।

12हे मोर भाईमन, जम्मो ले बड़े बात ए अय की कोनो बात म, तुमन कसम झन खावव—न स्वरग के, न धरती के, अऊ न कोनो आने चीज के। पर तुम्हर गोठ ह “हां” के “हां”, अऊ “नई” के “नई” होवय, ताकी तुमन दंड के भागीदार झन होवव।

बसिवास के पराथना

13कहूं तुमन म कोनो दुःखी हवय, त ओह पराथना करय, अऊ कहूं कोनो खुस हवय, त ओह परभू के भजन गावय। 14कहूं तुमन म कोनो बेमार हवय, त ओह कलीसिया के अगुवामन ला बलावय की ओमन परभू के नांव म ओकर ऊपर तेल लगाके ओकर बर पराथना करय। 15अऊ बसिवास के पराथना ले बेमरहा ह बने हो जाही, अऊ परभू ह ओला ठाढ़ कर दही। अऊ कहूं ओह पाप घलो करे होही, त ओकर छेमा हो जाही। 16एकरसेती, तुमन एक-दूसर के आघू म अपन-अपन पाप ला मान लेवव; अऊ एक-दूसर बर पराथना करव, ताकी तुम्हर बेमारी ह ठीक हो जावय। धरमी मनखे के पराथना ह सकृतिसाली अऊ परभावी होथे।

17एलियाह घलो हमरेच सही दुःख-सुख भोगी मनखे रहिसि। ओह गड़िगड़ि के पराथना करसि की पानी झन बरसय, अऊ साढ़े तीन बछर तक ले धरती म पानी नई गरिसि। 18तब ओह फेर पराथना करसि की बरसा होवय, त अकास ले बरसा होईस, अऊ भुइयां म फेर फसल होईस। 19हे मोर भाईमन, कहूं तुमन ले कोनो सत के रसता ले भटक जावय, अऊ कोनो ओला सही रसता म वापसि ले आवय, 20त एला जान लेवव की जऊन कोनो भटके पापी ला सही रसता म लानही, ओह ओकर परान ला मरितू ले बचाही, अऊ बहुते पाप के छेमा के कारन बनही।

a 1 “बारह गोत्र” के मतलब जम्मो मसीही
या यहूदी मसीही मन हो सकथे।